हिन्दी कहानी संचयन

डॉ. शंकर कुमार

अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
दिल्ली (भारत)

प्रकाशक :

अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

4378/4वी, 105, जे. एम. डी. हाउस, मुराली लाल स्ट्रीट,
अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

फोन : 011-23263018, 23277156

E-mail : adhyayanpublishers@yahoo.com

Website : www. adhyayanbooks.com

© लेखक

संस्करण : 2017

आइएसवीएन 978-93-8435-595-6

इस सम्पादित पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है।

भारत में मुद्रित

राकेश कुमार यादव द्वारा 'अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स' के लिए प्रकाशित।

INNOVATION IN PAYMENT SYSTEMS
An Approach Towards Cashless Mandis

© Dr. Priya Gupta
Dr. T.N. Ojha
Dr. Ritesh Verma
First Published 2017
ISBN: 978-93-83046-90-4

Published by
D.P.S. PUBLISHING HOUSE
4598/12B, Gola Cottage, Ansari Road, Darya Ganj, Delhi-110002
Ph. 011-43586184, Mob. 9811734184
E-mail: prashant_pbd@yahoo.co.in
dpspublishinghouse@gmail.com
WEB: www.dpspublishinghouse.com

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical or photocopying or otherwise, without prior permission in writing from the publishers/author.

Layout Designing
Creative Arts, Delhi-53
Mobile : 09999 22 6181

Printed in India

Published by DPS Publishing House, New Delhi and Printed at Vishal Kaushik Printers, Delhi.

Scanned with CamScanner

हिन्दी भाषा और साहित्य

हिन्दी (क)

[दिल्ली विश्वविद्यालय के नवीन सी.बी.सी.एस. पाठ्यक्रमानुसार बी.ए. (प्रोग्राम) एवं बी. कॉम (प्रोग्राम) प्रथम वर्ष सेमेस्टर-1/2 (MIL हिन्दी 'क') के विद्यार्थियों के लिए संपादित पाठ्य पुस्तक जिन्होंने 12वीं तक हिन्दी पढ़ी है]

संपादक
डॉ. चन्द्रशेखर राम
डॉ. राम किशोर यादव

प्रकाशक
श्री जी पब्लिशिंग हाउस
दिल्ली-110036 (भारत)

222

Chandra Shekhar Ram

©

प्रकाशक :
श्री ॐ पब्लिशिंग हाउस
दिल्ली-110036

एकमात्र वितरक :
संजय प्रकाशन
4378/4 बी, 209, जे.एम.डी. हाउस
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 23245808, 41564415
मो. : 9313438740
e-mail : sanjayprakashan@yahoo.in

ISBN : 978-81-920546-7-4

प्रथम संस्करण : 2017

मूल्य : 110.00 रुपये

शब्द-संयोजन
कम्प्यूटेक सिस्टम
दिल्ली-110032

मुद्रक :

अनुक्रमणिका

1. (क)	कबीर	19
	दोहा	23
(ख)	मीराबाई	25
	पद	29
2. (क)	बिहारी	32
	दोहा	38
(ख)	घनानंद	40
	पद	45
3. (क)	मैथिलीशरण गुप्त	46
	जयद्रथ वध (प्रथम परिसर्ग)	50
(ख)	जयशंकर प्रसाद	64
	हिमाद्रि तुंग शृंग से	67
(ग)	नागार्जुन	69
	बादल को घिरते देखा है	72
(घ)	रामधारी सिंह 'दिनकर'	76
	मेरे नगपति मेरे विशाल	80

224

हिन्दी भाषा और साहित्य

हिन्दी (ख)

[दिल्ली विश्वविद्यालय के नवीन सी.बी.सी.एस. पाठ्यक्रमानुसार बी.ए. (प्रोग्राम) एवं बी. कॉम (प्रोग्राम) प्रथम वर्ष सेमेस्टर-1/2 (MIL हिन्दी 'ख') के विद्यार्थियों के लिए संपादित पाठ्य पुस्तक जिन्होंने 10वीं तक हिन्दी पढ़ी है]

संपादक

डॉ. चन्द्रशेखर राम

डॉ. राम किशोर यादव

प्रकाशक

श्री जी पब्लिशिंग हाउस

दिल्ली-110036 (भारत)

Chandrashekhar Ram

प्रकाशक :
श्री जी पब्लिशिंग हाउस
दिल्ली-110036

एकमात्र वितरक :
संजय प्रकाशन
4378/4 डी, 209, जे.एम.डी. हाऊस
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 23245808, 41564415
मो. : 9313438740
e-mail : sanjayprakashan@yahoo.in

ISBN : 978-81-920546-8-1

प्रथम संस्करण : 2017

मूल्य : 80.00 रुपये

शब्द-संयोजन
कम्प्यूटेक सिस्टम
दिल्ली-110032

मुद्रक :

अनुक्रमणिका

1. भक्तिकालीन कविता
(क) कबीरदास 19
पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ... 25
कस्तूरी कुंडलि बसै...
यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत खान...
सात समुंदर की मसि करूँ
साधु ऐसा चाहिए...
सतगुरु हमसूँ रीझकर...
(ख) तुलसीदास 25
'रामचरितमानस' से केवट प्रसंग 32
2. रीतिकालीन कविता
(क) बिहारी 36
बतरस लालच लाल की... 42
या अनुरागी चित्त की...
सटपटाति-सी ससिमुखी
(ख) भूषण 44
इंद्र जिमि जंभ पर... 47
साजि चतुरंग सैन...
3. आधुनिक कविता
(क) सुभद्रा कुमारी चौहान 49
'बालिका का परिचय' 50
(ख) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' 53
वर दे वीणावादिनी... 55

226

हिन्दी भाषा और साहित्य

हिन्दी (ग)

[दिल्ली विश्वविद्यालय के नवीन सी.बी.सी.एस. पाठ्यक्रमानुसार बी.ए. (प्रोग्राम) एवं बी. कॉम (प्रोग्राम) प्रथम वर्ष सेमेस्टर-1/2 (MIL हिन्दी 'ग') के विद्यार्थियों के लिए संपादित पाठ्य पुस्तक जिन्होंने 8वीं तक हिन्दी पढ़ी है]

संपादक
डॉ. चन्द्रशेखर राम
डॉ. राम किशोर यादव

chandra shekhar Ram

प्रकाशक
श्री जी पब्लिशिंग हाउस
दिल्ली-110036 (दिल्ली)

©

प्रकाशक :
श्री जी पब्लिशिंग हाउस
दिल्ली-110036

प्रकाशन विभाग :
संजय प्रकाशन
4378/4 बी, 209, जेएमडी हाउस
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 23245808, 41564415
मो. : 9313438740
e-mail : sanjayprakashan@yahoo.in

ISBN : 978-81-920546-9-8

प्रथम संस्करण : 2017

मूल्य : 80.00 रुपये

शब्द-संयोजन
कम्प्यूटेक सिस्टम
दिल्ली-110032

मुद्रक :
[illegible]

227

अनुक्रमणिका

भक्तिकालीन कविता

1. कबीरदास 19
गुरु गोविंद दोऊ खड़े... 23
निंदक नियरे राखिए...
कबीर संगति साध की...
माला फेरत जुग भया...
पाहन पूजे हरि मिले...
वृच्छ कबहुँ न फल भखैं...
2. सूरदास 25
मैया मैं नहिं माखन खायो... 29
ऊधो मन न भए दस-बीस...

रीतिकालीन कविता

3. बिहारी 31
मेरी भव बाधा हरौ... 37
कनक कनक ते सौगुनी...
धरि ही गुन रीझते...
कहत नटत रीझत खिझत...
4. घनानंद 39
अति सूधो सनेह को मारग... 41
आधुनिक कविता
5. मैथिलीशरण गुप्त 43
नर हो, न निराश करो मन को... 47
6. सुमित्रानंदन पंत 49
आ धरती कितना देती है... 52

Chandra Shekher Ram

234

श्री नटराज प्रकाशन
ए-507/12, साउथ गामड़ी एक्सटेंशन, दिल्ली-110053

प्रेमचंद की प्रासंगिकता

चन्द्रकला सिंह
सुधीर सिंह

श्री नटराज प्रकाशन
दिल्ली–110053

chandrashekhar Ram

प्रकाशक
श्री नटराज प्रकाशन
ए-507/12, साउथ गामड़ी एक्स.
दिल्ली-110053
फोन न. 011-22941694

शाखा
19/154, शांतिपुरम् कालोनी
निअर ए.डी.ए. पुलिस चौकी,
आगरा रोड, अलीगढ़
उत्तर प्रदेश-202001
फोन : 0571-2417645

ISBN : 978-93-86113-42-9

© संपादक

मूल्य : 600.00 रुपए
प्रथम संस्करण : 2017

शब्द-संयोजन : प्रिंस कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110094
मुद्रक : पूजा ऑफसेट, दिल्ली-110091

भारत में मुद्रित : Premchand ki Prasangikta
by Chanderkala Singh , Sudheer Singh

श्री नटराज प्रकाशन, ए-507/12, साउथ गामड़ी एक्स. दिल्ली-110053 से टी. एस. राघव द्वारा प्रकाशित, प्रिंस कम्प्यूटर्स द्वारा पृष्ठ सज्जा व शशि सिंह द्वारा आवरण सज्जा तथा पूजा ऑफसेट प्रेस, भौजपुर, दिल्ली-110053 द्वारा मुद्रित।

कुछ कहने के बहाने

"प्रेमचंद की प्रासंगिकता" जैसा विशद विषय भी आज के परिवेश में प्रेमचन्द के कालजयी साहित्य के समक्ष सीमित लगता है तो क्या प्रेमचन्द काल से परे, वर्तमान समय में साहित्य और समाज के चिन्तन में कुछ इस प्रकार घुल-मिल कर एकसार हो चुके हैं कि जब तक भारतीय समाज के रेशे-रेशे और उसके मन-मस्तिष्क को उसी के परिवेश में उतर कर समझा नहीं जायेगा प्रेमचन्द और उनके साहित्य को अलग से किसी धारा या वर्ग विशेष में वर्गीकृत कर उसकी विवेचना करना एकांगी और अधूरा ही रहेगा। क्या इसी परिप्रेक्ष्य में प्रेमचन्द को उपन्यास सम्राट, कहानी सम्राट या भारतीय समाज के मसि-जीवी कलमकार या चितेरा साहित्यकार कहा जाता है। जिस समय वो भारतीय समाज विशेषकर मध्यवर्गीय शहरी और ग्रामीण समाज के सभी तबकों का यथार्थ उन्हीं की बोली बानी में चित्रित करते हुए उस दुःख-सुख के समान भागी और भोक्ता भी थे। उनके द्वारा रचित साहित्य में कोरी कल्पना अथवा देखी सुनी ही कहानियाँ नहीं थीं; उसी समाज का अभिन्न हिस्सा भी थे। समाज जाति, वर्ग, वर्ग में बटा जरूर था फिर भी एक ही समाज के सभी लोगों की स्थिति एक सी नहीं थी, और यही विविधता उनके उपन्यासों और कहानियों में अपनी भाव-भंगिमा में स्थान पाती है। यही कारण है कि जब उनका साहित्य समस्या की जड़ में जाकर उसको जिस रूप में चित्रित करता है उस वर्ग का पात्र समूची वर्गीय चेतना से चालित होते हुए भी अपने पूरे समाज का प्रतिनिधित्व न करके अपने जैसे समस्त भुक्त-भोगियों की आशा-निराशा, हार-जीत अथवा दुख-दर्द को अभिव्यक्त करता है। गोदान का 'होरी' सम्पूर्ण भारतीय किसान का ही जीवन्त रूप है जो अपने-अपने गांव प्रांत में इसी तरह की समस्याओं से जूझ रहे थे और आज भी जूझ रहे हैं। होरी मर कर भी मरा नहीं, अपितु वह तो प्रत्येक आत्महत्या कर रहे किसान के रूप में आजादी के सत्तर साल बाद भी आज तक तिल-तिल कर मर रहा है।

'सूरदास' के खतरे क्या आज खत्म हो गए हैं? भूमाफिया आज भी अलग-अलग वेश धारण करके रात-दिन आम-आदमी के गाढ़े खून की कमाई से खरीदी गयी जमीन के एक टुकड़े को हथियाने के लिए चालें चलते रहते हैं जिसमें शासन-व्यवस्था का वरदहस्त प्राप्त हो जाने से यह खेल और भी घिनौने रूप में फल-फूल रहा है।

यह तो मात्र कुछ उदाहरण है। जिसे मैं केवल कहने के लिए ही नहीं कह रही हूँ, या यहां उद्घाटित कर रही हूँ, बल्कि प्रेमचन्द की प्रासंगिकता विषय पर हुए

236

के सलीके से मानवीयता को जीवित रखने के हथियारों से लैस करती है। जिसमें पेड़, पौधे, पशु-पक्षियों सभी को जगह मिली है। सभी हमारी जिन्दगी का अहम हिस्सा बनकर आते हैं। दो बैलों की कथा, गुल्ली डंडा, बड़े भाई साहब, बड़े घर की बेटी और ईदगाह जैसी कहानियां किसकी स्मृति से बाहर हो सकती हैं। जिन पर फिल्में बनाना, बारम्बार बच्चों के लिए उनका मंचन किया जाना उनकी लोकप्रियता को ही नहीं प्रेमचन्द के साहित्य में उनकी नाटकीय चेतना को भी दर्शाती है। इसी कड़ी में डॉ. रीनू गुप्ता और डॉ. प्रतिभा राणा ने प्रेमचन्द की कहानियों के मंचन और फिल्मों में उनकी उपलब्धि को केन्द्र में रखते हुए प्रेमचन्द के साहित्य के मूल्यांकन को नया आयाम दिया है प्रतिभा ने जहां 'ईदगाह' कहानी के विश्लेषण के द्वारा प्रेमचन्द के साहित्य में नाटकीय तत्वों की ओर ध्यानाकर्षण करते हुए नाट्य रूपांतरण का नाटकीय आलेख भी उपलब्ध करवाया है। वहीं रीनू गुप्ता ने 'शतरंज के खिलाड़ी' और 'सद्गति' के कथ्य के विवेचन के साथ ही सत्यजीत रे के छायांकन (फिल्मांकन) में उभारे गए अन्य पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला है। दोनों ही पक्षों में नाटकीय संभावना से आगे की समझ के साथ पर्दे और मंच की बारीकियों को उद्घाटित किया गया है। उन्हीं के शब्दों में- "प्रेमचन्द ने 'शतरंज के खिलाड़ी' और 'सद्गति' कहानियों ने जिस युग व्यवस्था और मानवीय विघटन को चित्रित किया है, उसकी वास्तविक कलात्मक अभिव्यक्ति सत्यजित रे ने दोनों फिल्मों में परदे पर साकार कर दी।" तो दूसरी तरफ 'ईदगाह' कहानी को बाल मनोविज्ञान से भिन्न अपने शोध लेखन में एम.ए के छात्र सुभाष ने "ईदगाह कहानी में अभावग्रस्त जीवन" के द्वारा निम्न मध्यमवर्गीय जीवन में व्याप्त अभावग्रस्त के कारण उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों के परिप्रेक्ष्य में पूरी कहानी का मर्मस्पर्शी स्थितियों में मूल्यांकन किया है।

अंत में सेमिनार की सफलता में जिन विद्वतजनों का सहयोग रहा है जिनके वक्तव्य और मार्गदर्शन ने न सिर्फ प्रतिभागियों के रचनात्मक बोध को सराहा बल्कि यहां पुस्तकाकार रूप में वे अपने आलेखों के द्वारा प्रत्यक्ष न होकर भी अप्रत्यक्ष रूप में उपस्थित रहेंगे, जिनमें प्रमुख रूप से राजवीर शर्मा जी, विभुति नारायण राय और प्रो. सदानन्द शाही जी ने अपनी गरिमामय उपस्थिति और सक्रिय भागीदारी से हम सभी को लाभान्वित किया। आप सभी का हृदय से अभिनंदन।

अन्त में अपने प्रकाशक श्री राघव जी एवं डॉ. सुधीर सिंह और अन्य सभी मित्रों का आभार जिनके सहयोग ने मुझे इस कार्य के लिए निरन्तर उत्साही और ऊर्जावान बनाए रखा।

डॉ. चन्द्रकला सिंह

अनुक्रम

कुछ कहने के बहाने 5
1. प्रेमचंद का सामाजिक चिन्तन / *डॉ. संतोष सैन* 13
2. प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक बोध / *डॉ. ज्योति शर्मा* 18
3. प्रेमचंद का ग्रामीण जीवन और गोदान / *अंजली जोशी* 22
4. सहानुभूति और स्वानुभूति के बीच प्रेमचंद के साहित्य में दलित चिंतन/ *डॉ. चंद्रकला* 28
5. मुंशी प्रेमचंद की कहानियों का नाटकीय पक्ष / *डॉ. प्रतिभा राणा* 43
7. प्रेमचंद और उनका समाज / *डॉ. गुलशन बानो* 59
8. प्रेमचंद के उपन्यासों में व्यक्ति और समाज / *डॉ. प्रवीन भारद्वाज* 65
9. प्रेमचंद के उपन्यासों में ग्रामीण समस्याएं / *डॉ. ललिता मीना* 72
10. मध्यवर्ग की भूमिका और गोदान / *डॉ. इन्दु कुमारी* 79
11. निर्मला की भाषा में लैंगिक चेतना / *आशुतोष शुक्ल* 86
12. प्रेमचंद और गांधीवाद / *डॉ. रीता दुबे* 91
13. सांस्कृतिक समन्वय और प्रेमचंद / *डॉ. रीता सिन्हा* 103
14. प्रेमचन्द की प्रासंगिकता का सवाल / *बनियाल त्यागी* 111
15. परदे पर प्रेमचंद का कथा संसार : वास्तविकता की कलात्मक प्रस्तुति/ *डॉ. रीनू गुप्ता* 119
16. आधुनिक संदर्भों में प्रेमचंद और उनका गोदान / *डॉ. कुसुमलता* 126
17. प्रेमचंद के उपन्यासों की नारियाँ : नवजागरण के संदर्भ में / *डॉ. अनीता मिश्र* 132
18. दलित साहित्य के यक्ष प्रश्न / *डॉ. चंद्रशेखर राम* 141
19. गोदान का कृषक जीवन / *डॉ. कुसुम नेहरा* 153
20. प्रेमचंद के साहित्य में गांधीवादी चेतना/ *डॉ.दीनदयाल* 158
21. प्रेमचंद का साहित्यिक मूल्यांकन/ *डॉ. रामकिशोर यादव* 164

chandra shekhar Ram